SHANE USMANE GHANI
(HINDI BAYAAN)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

शाने उ़स्माने ग़नी

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

शाने उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की, कि मुझे ख़्वाब में अबू सालेह़ मुअज़्ज़िन की ज़ियारत हो जाए ।'' मेरी दुआ़ मक़्बूल हुई, चुनान्चे एक रात मैं ने उन को ख़्वाब में बड़ी अच्छी ह़ालत में देखा । मैं ने उन से दरयाफ़्त किया । ''ऐ अबू सालेह़ ! अपने यहां की कुछ ख़बर दीजिये ।'' उन्हों ने जवाब दिया : ऐ अबू ह़सन अगर मैं ने सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कस्रत न की होती तो मैं हलाक हो जाता ।''

(القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول اللہ... الخ، ص۲٦۰)

मेरे आ'माल का बदला तो जहन्नम ही था मैं तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 61)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج٦ ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

www.dawateislami.net

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ اُذْکُرُوا اللّٰہَ، تُوبُوْا اِلَی اللّٰہِ صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ **(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बे मिसाल वाक़िआ़

मन्क़ूल है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) सरकारे वाला तबार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी काम में मश्ग़ूल थे कि नमाज़े अ़स्र का वक़्त हो गया । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ़'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगे बढ़ कर इमामत कराने का कहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : आप इस के मुझ से ज़ियादा ह़क़दार हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को मुक़द्दम फ़रमाया और आप की ता'रीफ़ की । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : उ़स्मान कितना अच्छा इन्सान है, मेरा दामाद है और मेरी दो बेटीयों का शोहर है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस में मेरा नूर इक्ठ्ठा कर दिया है । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर के ज़रीए़ इस्लाम को मुकम्मल फ़रमाया । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा, क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि : उ़स्मान से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर के ज़रीए़ दीन की तक्मील फ़रमाई और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त बख़्शी । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि : उ़स्मान कुरआने पाक को जम्अ़ करेगा और येह रह़मान عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

को येह फ़रमाते सुना कि : उ़मर कितना अच्छा इन्सान है, बेवाओं और यतीमों की ख़बरगीरी करता है, उन के लिये उस वक़्त खाना लाता है जब लोग आ़लमे ख़्वाब में होते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जैशुल उ़सरह (या'नी ग़ज़्वए तबूक का लश्कर) तय्यार करने वाले उ़स्मान की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं आप से आगे नहीं बढ़ूंगा, क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ़ फ़रमाते सुना कि : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम फ़ारूक़ रखा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के ज़रीए ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ किया। इस वाक़िए़ की ख़बर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों के लिये दुआ़ फ़रमाई और एक दूसरे से हुस्ने अदब के साथ पेश आने पर उन की ता'रीफ़ फ़रमाई। (الروض الفائق، ص: ۳۱۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की आपस में मह़ब्बत व उल्फ़त और एक दूसरे का एह़तिराम करने का मुक़द्दस जज़्बा मा'लूम हुवा वहीं सय्यिदुना फ़ारूक़े आ़'ज़म और सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की अ़ज़मत व शान भी वाज़ेह़ हो गई। मज़ीद इस से येह मदनी फूल भी मिला कि जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان एक दूसरे के मक़ाम व मर्तबे का एह़तिराम करते हैं तो हमें तो इन की अ़ज़मत व शौकत को ख़ूब ख़ूब बयान करना चाहिये और न सिर्फ़ ख़ुद इन की मह़ब्बत को अपने दिल में बिठाए रखें बल्कि अपनी अवलाद को भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत और इन का अदब सिखाएं। इस का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि अपने बच्चों को सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के वाक़िआ़त सुनाएं, इन की सीरत व किरदार के बारे में बताएं और इन के त़रीक़े पर चलने की तरग़ीब भी

www.dawateislami.net

दिलाएं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने 695 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**अल्लाह वालों की बातें** (जिल्द अव्वल)" शाएअ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है, इस किताब में 97 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुख़्तसर ह़ालात व वाक़िआ़त के साथ साथ बे शुमार मदनी फूल भी जां ब जां अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं । आप भी इस किताब को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हम अपने अस्लाफ़ की सीरत व किरदार से वाक़िफ़ हो कर उन के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश भी करेंगे । इसी त़रह़ मक्तबतुल मदीना की एक और बड़ी प्यारी किताब "**करामाते सह़ाबा**" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं, इसी त़रह़ सह़ाबा की सीरत के मुतअ़ल्लिक़ मक्तबतुल मदीना की एक और बहुत ही प्यारी किताब है, इस का नाम "**ख़ुलफ़ाए राशिदीन**" ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नामे नामी इस्मे गिरामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام में सब से अफ़्ज़ल व आ'ला हमारे आक़ा व मौला ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, इसी त़रह़ दीगर तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के अस्ह़ाब में भी सब से अफ़्ज़ल मक़ाम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का है और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में सब से अफ़्ज़ल ख़ुलफ़ाए राशिदीन (या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن) हैं । आज हम इन ख़ुलफ़ाए इ़ज़ाम में से तीसरे ख़ुलीफ़ए राशिद, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शानो अ़ज़मत के बारे में सुनेंगे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी इस्मे गिरामी ज़मानए जाहिलिय्यत (इस्लाम लाने से पहले) और ज़मानए इस्लाम दोनों में "**उ़स्मान**" ही रहा । (ریاض النضرۃ، ج۲، ص۵)

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नसब की अफ़ज़लिय्यत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल है कि आप का नसब पांचवीं पुश्त में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दे मनाफ़ पर जा कर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसबे मुबारक से जा मिलता है। इस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब सब से कम या'नी फ़क़त़ पांच[5] वासित़ों से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है।

(ریاض النضرۃ، ج۲، ص۵ ماخوذاً)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत और इस की वज्ह

ज़मानए जाहिलिय्यत में (इस्लाम लाने से पहले) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "**अबू अ़म्र**" थी, बा'द में जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ हुवा, उन से एक शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई तो उन के नाम से कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" रख ली। फिर आप के एक और बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई तो उन के नाम से कुन्यत "अबू अ़म्र" रख ली, दोनों मश्हूर हैं लेकिन "अबू अ़म्र" ज़ियादा मश्हूर है। (طبقات کبری، عثمان بن عفان، ج۳، ص۳۹، ریاض النضرۃ، ج اللہ عزوجل، ص۲)

दौरे जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अवसाफ़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत में भी अपनी क़ौम के शरीफ़ और इ़ज़्ज़तदार लोगों में शुमार किये जाते थे। त़बीअ़त का जमाल, आप के जलाल पर ग़ालिब था, येही वज्ह है कि निहायत ही शीरीं कलाम फ़रमाते थे, बहुत ही शफ़ीक़ व मेहरबान थे। जाहो ह़श्मत (शानो शौकत) के मालिक, निहायत ही मालदार मगर शर्मो ह़या के पैकर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका तमाम सिफ़ाते रज़ीला (बुरी सिफ़ात) से पाक थी, बल्कि जाहिलिय्यत के दौर में भी आप ऐसी बा कमाल सिफ़ात से मुत्तसिफ़ थे कि ख़ुद क़ुरैश के

www.dawateislami.net

लोग भी आप से बे पनाह मह़ब्बत किया करते थे। चुनान्चे, कु़रैश की आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत इतनी मश्हूर थी कि ज़रबुल मसल बन गई और माएं जब रात को अपने बच्चों को सुलातीं तो उन्हें अपना प्यार जताते हुवे यूं कहतीं "اُحِبُّكَ وَالرَّحْمٰنُ حُبَّ قُرَيْشٍ عُثْمَان" या'नी मैं और मेरा रब عَزَّوَجَلَّ तुझ से मह़ब्बत करते हैं जैसे कु़रैश (सय्यिदुना) उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत करते हैं।

(تاریخ ابن عساکر، ج۳۹، ص۲۵۱، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरापाए अक़्दस

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ूब सूरत हुल्ये के मालिक और इन्तिहाई ख़ूब रू इन्सान थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़द मुबारक न बिल्कुल छोटा था और न ही बहुत बड़ा बल्कि मुतवस्सित़ था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का चेहरा निहायत ही ह़सीनो जमील, रंग सुर्ख़ी माइल गौरा (या'नी गुलाबी) था। दोनों रुख़्सार बड़े बड़े, कान लम्बे, मुबारक दांत निहायत ही ख़ूब सूरत, सीना मुबारक चौड़ा, दोनों कन्धों के दरमियान फ़ासिला होने के साथ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पिन्डलियां मज़बूत़ और दीदा ज़ैब, जब कि बाज़ू मुबारक क़दरे लम्बे थे। सरे अक़्दस पर घुंघरियाली ज़ुल्फ़ें निहायत ही घनी और कानों के नीचे तक थीं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की दाढ़ी की त़रह़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी भी घनी थी। जिल्द बारीक लेकिन सुन्हरी बालों से पुर थी, इस क़दर हुस्नो जमाल और ख़ूब सूरती के मालिक होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शर्मो ह़या के पैकर थे। (طبقات کبری، عثمان بن عفان، ج۳، ص۴۲، الاصابۃ، عثمان بن عفان، ج۴، ص۳۷۷، ریاض النضرۃ، ج۲، ص۶)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई मालदार होने के बा वुजूद क़ीमती लिबास के बजाए हु़जू़रे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिबास की पैरवी किया करते थे और इ़श्क़ो मह़ब्बत का तक़ाज़ा भी येही है कि ज़ाहिरी हुल्या भी प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का आईनादार हो। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

लिबास में भी इत्तिबाए सुन्नत :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तहबन्द निस्फ़ पिन्डली तक हुवा करता और इस की वज्ह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाया करते कि ''هٰكَذَا كَانَتْ اِزْرَةُ صَاحِبِیْ'' या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तहबन्द भी इसी त़रह़ (या'नी निस्फ़ पिन्डली तक)होता था।

(الشمائل المحمدیۃ،باب ماجاء فی صفۃ ازار۔۔۔الخ،ص۸۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सुन्नते रसूल पर अ़मल का जज़्बा मरह़बा ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लिबास पहनने में भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी फ़रमाया करते। हमें भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ बदन पर सफ़ेद लिबास, सर पर जुल्फ़ें नीज़ गुम्बदे ख़ज़रा की यादों से माला माल सब्ज़ सब्ज़ इमामा, चेहरे पर शरीअ़त के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी, आंखों में सुरमा, सर में तेल लगा कर सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन जाना चाहिये और फ़ैशन वाले तंग व चुस्त लिबास पहनने से न सिर्फ़ ख़ुद बचना चाहिये बल्कि दूसरों को भी शफ़्क़त व मह़ब्बत के साथ समझाते हुवे सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दिलानी चाहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! अब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द अल्क़ाबात और इन की वुजूहात सुनते हैं।

पहला लक़ब "ज़ुन्नूरैन"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक मश्हूरो मा'रूफ़ लक़ब ''ज़ुन्नूरैन या'नी दो नूर वाला'' भी है। इस लक़ब की ज़ियादा मश्हूर वज्ह येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में यके बा'दे दीगरे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो शह़ज़ादियां ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते सय्यिदतुना कुल्सूम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) आईं, इसी वज्ह से आप को "**ज़ुन्नूरैन**" कहा जाता है। (تهذيب الاسماء، باب العين و الثاء المثلة، ج ۱، ص ۴۵۳)

आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इसी बात की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाते हैं :

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का   हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरा लक़ब "जामेउ़ल क़ुरआन"

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक लक़ब "**जामेउ़ल क़ुरआन**" भी है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़हद में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे से मुतफ़र्रिक़ मक़ामात से क़ुरआने पाक के तमाम सह़ाइफ़ जमा कर लिये थे, मगर इस में तीन काम बाक़ी थे, जमअ़ किये गए सह़ाइफ़ को एक मुस्ह़फ़ में नक़्ल करना, फिर उस एक मुस्ह़फ़ के मुख़्तलिफ़ नुस्ख़े इस्लामी मुमालिक के बड़े बड़े शहरों में तक़्सीम करना और सब को लहजए क़ुरैश पर पढ़ने का हुक्म देना। येह तीनों काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से लिये और क़ुरआने अ़ज़ीम का जम्अ़ करना वा'दए इलाहिय्या के मुत़ाबिक़ ताम्म व कामिल (या'नी मुकम्मल) हुवा, इस लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**जामेउ़ल क़ुरआन**" कहते हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 452, फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर स. 419 मुलख़्ख़सन)

तुम्हीं को जामेए़ क़ुरआन का ह़क़ ने दिया मन्सब

अ़त़ा क़ुरआं को कर के जम्अ़ की उम्मत को आसानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीसरा लक़ब "मुजह्हज़ो जैशिल उ़सरह"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक लक़ब मुजह्हज़ो जैशिल उ़सरह भी है, जिस का मा'ना है तंगी वाले लश्कर की माली मुआ़वनत करने वाला। जंगे तबूक के मौक़अ़ पर जो इस्लामी लश्कर तय्यार हुवा था उसे जैशुल उ़सरह कहा जाता है क्यूंकि ग़ज़्वए तबूक निहायत ही दुश्वार मक़ाम और शदीद गर्मी के मौसम में हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं बारगाहे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर था और हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जैशिल उ़सरह(या'नी ग़ज़्वए तबूक) की तय्यारी के लिये तरग़ीब इरशाद फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पालान और दीगर मुतअ़ल्लिक़ा सामान समेत सो ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं। हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन फ़रमाया। तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोबारा खड़े हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं तमाम सामान समेत दो सो ऊंट ह़ाज़िर करने की ज़िम्मेदारी लेता हूं। दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन इरशाद फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं मअ़ सामान तीन सो ऊंट अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूं। येह सुन कर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुवे। इसी लिये आप को मुजह्हज़ो जैशिल उ़सरह या'नी तंगी वाले लश्कर की माली मुआ़वनत करने वाला कहते हैं। (ترمذی، کتاب المناقب، مناقب عثمان بن عفان، ج۵، ص۳۹۱، حدیث: ۳۷۲۰)

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़त़ा ह़िस्सा सख़ावत का

क़नाअ़त हो इनायत दे न दौलत की फ़रावानी

(वसाइले वख़्शिश, स. 585)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल कुछ लोग दूसरों की देखा देखी जज़्बात में आ कर चन्दा देने का लिखवा तो देते हैं मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ जाता है, ह़त्ता कि बा'ज़ तो देते भी नहीं ! मगर क़ुरबान जाइये ! मह़बूबे मुस्त़फ़ा, सय्यिदुल अस्खिय़ा उ़स्माने बा ह़या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जूदो सख़ा पर कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ए'लान से बहुत ज़ियादा चन्दा पेश किया । मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 950 ऊंट, 50 घोड़े, और 1000 अशरफ़ियां पेश कीं, फिर बा'द में 10 हज़ार अशरफ़ियां और पेश कीं । (मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहली बार में 100 का ए'लान किया, दूसरी बार 100 ऊंट के इ़लावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का कुल 600 ऊंट (पेश करने) का ए'लान फ़रमाया ।

(मिरआतुल मनाजीह़ ४जि. 8, स. 395, अज़ : करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 6)

मुझे अपनी सख़ावत के समन्दर से कोई क़त़रा अ़त़ा कर दो नहीं दरकार मुझे ताजे सुल्त़ानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 585)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चौथा लक़ब साह़िबुल हिजरतैन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस त़रह़ दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये अपना माल लुटाते थे, इसी त़रह़ ख़ुद भी पीछे नहीं रहते थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन चन्द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن में से हैं जिन्हों ने राहे ख़ुदा में दो बार हिजरत की, एक बार ह़बशा की त़रफ़ और दूसरी बार मदीनए मुनव्वरा

www.dawateislami.net

زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़। इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ''साहि़बुल हिजरतैन'' के लक़ब से भी याद किया जाता है। जिस का मत़लब है दो हिजरतें करने वाला। (طبقات کبری، عثمان بن عفان، ج۳، ص۴۰، اسد الغابۃ، عثمان بن عفان، ج۱، ص۷۴۹, करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 4)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप की अ़ज़मत के पेशे नज़र किन किन अल्क़ाबात से याद किया जाता है। यक़ीनन एक आदमी के उ़म्दा अवसाफ़ जितने ज़ियादा होंगे उतना ही उसे अच्छे अल्क़ाब और अच्छे अन्दाज़ से याद किया जाएगा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इतने अल्क़ाबात का होना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मतो शान की अ़लामत है।

अह़ादीसे मुबारका और शाने उ़स्माने ग़नी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन देखा जाता है कि एक ग़ुलाम तो अपने आक़ा की इ़नायतों और उस के लुत़्फ़ो करम के सबब उस की ता'रीफ़ में रत़बुल्लिसान रहता है। लेकिन कमाल येह है कि जब आक़ा भी अपने ग़ुलाम की ख़ूबियों पर उस की ता'रीफ़ करे और उस से क़ाइम होने वाले वालिहाना तअ़ल्लुक़ का इज़हार करे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी उन ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है कि जिन के ह़क़ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लबे जां बख़्श ने कई बार जुम्बिश फ़रमाई, कभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दरबारे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जन्नत का मुज़्दा अ़त़ा हुवा तो कभी आप को मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना जन्नती रफ़ीक़ क़रार दिया, कभी आप को कामिल ह़या की सनद अ़त़ा फ़रमाई तो कभी आप की शफ़ाअ़त के ज़रीए लोगों के

www.dawateislami.net

जन्नत पाने का ए'लान फ़रमाया । आइये शाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

1. उ़स्मान मुझ से है और मैं उ़स्मान से हूं (تاریخ دمشق، ۱۰۲/۳۹)
2. जन्नत में हर नबी का एक रफ़ीक़ होगा और मेरे रफ़ीक़ उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान हैं (تاریخ دمشق، ۱۰۴/۳۹)
3. बरोज़े क़ियामत उ़स्मान की शफ़ाअ़त से सत्तर हज़ार (70,000) ऐसे आदमी बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होंगे जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होगी । (تاریخ دمشق، ۱۲۲/۳۹)
4. ह़या ईमान से है और मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा ह़यादार उ़स्मान हैं । (تاریخ دمشق، ۹۲/۳۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शर्मो ह़या के भी क्या कहने कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी आप से ह़या फ़रमाते हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा निहायत उ़म्दा अवसाफ़ के ह़ामिल रहे, यहां तक कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी कई बुराइयों से दूर रहे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद अपने बा'ज़ अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने न कभी फ़ुज़ूल अश्आ़र गुनगुनाए और न ही उन की तमन्ना की, ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में कभी शराब न पी और जब से मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की है, तब से अपने दाएं हाथ से अपनी शर्मगाह को नहीं छुवा ।

(تاریخ ابن عساکر، ج۳۹، ص۲۲۵)

मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं बन्द कमरे में ग़ुस्ल करता हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या की वज्ह से सिमट जाता हूं । (مرقاۃ المفاتیح ج۸ص۸۰۳، تحت الحدیث ۵۰۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शर्मो ह़या थी, जब कि हमारे यहां बे शर्मी व बे ह़याई का आ़लम येह है के बा'ज़ लोग टीवी पर फ़िल्मों ड्रामों के फ़ोह़ूश (बेहूदा) मनाज़िर कभी तन्हा तो कभी पूरी फ़ेमेली के बीच में बड़ी दिलचस्पी से देखते हैं, अब तो **مَعَاذَ اللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ गुनाह इस क़दर आ़म हो गया है कि मोबाइल व इन्टरनेट के ज़रीए न जाने कैसे कैसे गुनाहों का इर्तिकाब ब

www.dawateislami.net

आसानी किया जाता होगा । शोश्यल मीडिया के ज़रीए तरक़्क़ी की मनाज़िल की तलाश और दुन्यवी मा'लूमात से अपने आप को हर वक़्त अपडेट रखने की सोच में शायद कई लोग गुनाहों के समनदर में उतर कर अपने क़ीमती वक़्त को बरबाद करते होंगे, शादी बियाह और दीगर तक़्रीबात में बेहूदा फ़ंक्शन्ज़ (Functions) का इन्तिज़ाम किया जाता है, जिन में मर्द व औ़रत का इख़्तिलात़ (मेल जोल) और हंसी मज़ाक़ किया जाता है । अक्सर घर सिनेमा घरों और अक्सर मजालिस नक़्क़ार ख़ानों (या'नी नोबत व ढोल वग़ैरा बजाने की जगहों) का समा पेश करती हैं, बे पर्दा ख़वातीन शर्मो ह़या को बालाए त़ाक़ रखते हुवे गली बाज़ारों की ज़ीनत बनती हैं तो मर्द भी अपनी आंखों से ह़या धो डालते हैं और ऐसी ख़वातीन को आंखें फाड़ फाड़ कर देखना गोया कि अपना ह़क़ समझते हैं । अल ग़रज़ हमारा मुआ़शरा फ़ह़्हाशी, उ़र्यानी व बे ह़याई की आग की लपेट में बड़ी तेज़ी से आता जा रहा है, जिस के सबब ख़ास कर नई नस्ल अख़्लाक़ी बे राह-रवी व शदीद बद अ़मली का शिकार होती जा रही है । हमारे मुआ़शरे में ह़या ख़त्म होने का सबब ही हम सरे आ़म ना जाइज़ो ह़राम काम और ढ़ेरों गुनाह करते बिल्कुल नहीं शर्माते । गाली देना, तोहमत लगाना, बद गुमानी, ग़ीबत, चुग़ली, झूट बोलना, किसी का माल नाह़क़ खाना, ख़ून बहाना, मुसलमानों को बुरे अल्क़ाब से पुकारना, शराब, जूआ, चोरी-डकैती, सूद व रिश्वत का लैन दैन, मां बाप की ना फ़रमानी, अमानत में ख़ियानत, ग़ुरूर व तकब्बुर, ह़सद व रियाकारी, हुब्बे जाह, बुख़्ल व ख़ुद पसन्दी वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों का इर्तिकाब हमारे मुआ़शरे में बड़ी बे बाकी के साथ किया जाता है । ऐसा मह़सूस होता है कि शर्मो ह़या हमें छू कर भी नहीं गुज़री । हमारा मुआ़मला तो येह हो चुका है कि :

दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे

शर्मे नबी, ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बिठाने और शर्मो ह़या अपनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र इख़्तियार कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और अपनी आख़िरत संवारने के लिये रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक मदनी मुज़ाकरे में मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाने के ह़वाले से मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाते हैं कि : "हर रोज़ फ़िक्रे मदीना कर के मदनी इन्आ़मात के रिसाले के ख़ाने पुर करें और ज़िम्मेदार को हर मदनी माह की पहली तारीख़ को जमअ़ करवा दें, 10 तारीख़ का इन्तिज़ार न करें ।" हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये और दा'वते इस्लामी का हर दिल अ़ज़ीज़ 100 फ़ीसद इस्लामी चैनल "**मदनी चैनल**" ख़ुद भी देखते रहिये और दूसरों को भी देखने की तरग़ीब दिलाते रहिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते उ़स्मान का मुसलमानों के लिये पानी ख़रीदना

मन्क़ूल है कि जब मुहाजिरीन, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आए तो यहां का नमकीन पानी उन्हें रास न आया । बनी ग़फ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़ रखने वाले एक शख़्स की मिल्क में पानी का एक मीठा चश्मा था जिसे "**रूमह**" कहा जाता था । वोह उस की एक मश्क एक "मुद" के इ़वज़ बेचते थे । रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : येह चश्मा मेरे हाथ एक चश्मए बिहिश्त (या'नी जन्नती चश्मे) के इ़वज़ बेच दो । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा और मेरे बच्चों का गुज़र बसर इसी पर है, मुझ में ऐसा करने की इस्तित़ाअ़त नहीं ।" जब येह ख़बर ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंची तो आप ने वोह चश्मा मालिक से पैंतीस हज़ार दिरहम में ख़रीद लिया, फिर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَتَجْعَلُ لِی مِثْلَ الَّذِی جَعَلْتَہٗ لَہٗ عَیْنًا فِی الْجَنَّۃِ اِنِ اشْتَرَیْتُھَا या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या जिस त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस शख़्स को जन्नती चश्मा अ़त़ा फ़रमा रहे थे, अगर मैं येह चश्मा उस से ख़रीद लूं तो हुज़ूर मुझे अ़त़ा फ़रमाएंगे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मैं ने वोह चश्मा ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ़ कर दिया। (معجم کبیر، بشیر الاسلمی ابو بشر، ج۲، ص۴۱)

सरकार से पाएंगे मुरादों पे मुरादें दरबार पे दुरबार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े नात, स. 44)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जिस वक़्त मुसलमानों को पानी के ह़वाले से शदीद परेशानी थी तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह पूरा चश्मा ख़रीद कर राहे ख़ुदा में वक़्फ़ कर दिया। हमें भी चाहिये कि अगर किसी मुसलमान को परेशानी या किसी मुसीबत में मुब्तला देखें और उस की ह़ाजत पूरी करने की इस्तित़ाअ़त रखते हों तो उस की मुश्किलात दूर करने की कोशिश करें। वोह शख़्स बड़ा ही ख़ुश नसीब है जो मोह़ताजों की मदद करता, ग़रीबों की दाद रसी करता, ग़मगीनों की ग़म गुसारी और परेशान ह़ालों की परेशानी दूर करता है क्यूंकि जो मख़्लूक़ पर रह़्म करता है, **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ भी उस पर रह़्मो करम की ऐसी बारिश फ़रमाता है कि उस की ज़िन्दगी में हर त़रफ़ बहारें ही बहारें आ जाती हैं। आइये दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं।

1. जिस ने मोमिन की दुन्यवी परेशानियों में से एक परेशानी दूर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की परेशानियों में से एक परेशानी दूर फ़रमाएगा, जो दुन्या में तंग दस्त को आसानी फ़राहम करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के लिये आसानियां पैदा फ़रमाएगा, जो दुन्या में किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा,

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है।

(مسلم، کتاب الذکر والدعا، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القران، رقم ۲۶۹۹، ص ۱۴۴۷)

2. जो शख़्स अपने भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चले, उस का येह अ़मल उस के लिये दस साल ए'तिकाफ़ करने से बेहतर है और जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन ए'तिकाफ़ करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल फ़रमा देता है और उन में से दो ख़न्दक़ों का दरमियानी फ़ासिला मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासिले से ज़ियादा है।

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین .. الخ، رقم ۸، ج ۳، ص ۲۶۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपने मुसलमान भाइयों की ख़बरगीरी करने और उन की मुश्किलात ह़ल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

साक़िये कौसर ने सैराब फ़रमा दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ह़ाजतों को पूरा करता है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा बन जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमाता है। चूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी सारी ज़िन्दगी लोगों की ह़ाजतें पूरी करने, उन की मुश्किलात ह़ल करने और ग़रीबों की मदद करने में बसर फ़रमाई, इस लिये जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर आज़माइश आई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर पानी बन्द कर दिया गया तो जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद आ कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सैराब फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिन दिनों बाग़ियों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकाने रफ़ीउ़श्शान का मुह़ासरा किया हुवा था, उन

www.dawateislami.net

के घर में पानी की एक बुन्द तक नहीं जाने दी जा रही थी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ प्यास की शिद्दत से तड़पते रहते थे। मैं आप से मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुवा तो आप ने मुझे देख कर इरशाद फ़रमाया : ''مَرْحَبًا بِاَخِیْ या'नी ऐ मेरे भाई ! ख़ुश आमदीद'' फिर इरशाद फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, मैं ने आज रात रह़मते आ़लमियान, मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस रोशन दान में देखा, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिहाई मुश्फ़िक़ाना (या'नी हमदर्दाना) लहजे में इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान उन लोगों ने क़ैद कर के और पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां, ।'' तो फ़ौरन ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक डोल मेरी त़रफ़ लटका दिया जो पानी से भरा हुवा था, मैं ने उस में से पीना शुरूअ़ किया यहां तक कि सैराब हो गया और अब इस वक़्त भी उस पानी की ठंडक अपनी दोनों छातियों और दोनों कन्धों के दरमियान महसूस कर रहा हूं। फिर हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ''اِنْ شِئْتَ نَصَرْتُ عَلَیْھِمْ وَاِنْ شِئْتَ اَفْطَرْتَ عِنْدَنَا'' या'नी अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो मैं उन लोगों के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करूं और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा इफ़्त़ार करो।'' तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे पुर अन्वार में ह़ाज़िर हो कर रोज़ा इफ़्त़ार करना पसन्द किया (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं स्नस के बा'द रुख़्सत हो कर चला आया) और उसी रोज़ बाग़ियों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया। ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने बात़ीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ौल के मुत़ाबिक़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार वाला येह वाक़िआ़ ख़्वाब में नहीं बल्कि बेदारी की ह़ालत में पेश आया''।

(الحاوی للفتاوی، ج۲، ص۳۱۵, अज़ करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 12)

रखा महसूर इन को, बन्द इन पर कर दिया पानी शहादत ह़ज़रते उ़स्मान की बेशक है लासानी

(वसाईले बख़्शिश, स. 585)

www.dawateislami.net

बेकसों का सहारा हमारा नबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और उस की अ़ता से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तमाम ह़ालात ज़ाहिर व आश्कार थे, साथ ही येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बे कसों के मददगार भी हैं जभी तो फ़रमाया : "اِنْ شِئْتَ نَصَرْتُ عَلَیْہِمْ" या'नी अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो उन लोगों के मुक़ाबले में तुम्हारी इमदाद करूं ?

वस्वसा : इस रिवायत को सुन कर हो सकता है शैत़ान किसी के ज़ेह्न में येह वस्वसा डाले कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते पाक के होते हुवे किसी ग़ैर से मदद मांगने की क्या ज़रूरत है ? जब वोह अपने बन्दों की सुनता है और मदद भी करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगनी चाहिये ।

जवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! येह शैत़ान का ख़ौफ़नाक वार है, इस त़रह़ की बातें करने वाले बा'ज़ अवक़ात अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की तौहीन कर जाते हैं और तौहीने अम्बिया के सबब कुफ़्र में जा पड़ते हैं । इस लिये हमें चाहिये कि ऐसे लोगों की सोह़बत से न सिर्फ़ ख़ुद बचें बल्कि दूसरों को भी बचाने की कोशिश करें ।

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना कैसा ?

इस वस्वसे की काट करने के लिये येह याद रखिये ! ह़क़ीक़तन मदद करना सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के साथ ख़ास है । उस की अ़ता के बिग़ैर एक ज़र्रा भी फ़ाइदा नहीं दे सकता, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی भी उस की दी हुई त़ाक़त व इजाज़त से मदद फ़रमाते हैं । येह इसी त़रह़ है जैसे किसी फ़ैक्ट्री या कारख़ाने का मालिक वहां काम करने वाले मज़दूरों पर एक सुपर वाइज़र या नाज़िम मुक़र्रर करे और फिर येह हुक्म जारी कर दे कि माहाना तनख़्वाह इसी से वुसूल की जाए। अगर कोई मज़दूर यूं ए'तिराज़ करे के मालिक के होते हुवे

www.dawateislami.net

सुपर वाइज़र या नाज़िम की क्या ज़रूरत ? और हम मालिक के होते हुवे किसी और से तनख़्वाह क्यूं लेंगे ? हम तो मालिक से ही पैसे लेंगे । तो यक़ीनन उस मुलाज़िम की बात को बे वुक़ूफ़ी और मालिक की मुख़ालफ़त ही समझा जाएगा । क्यूंकि सुपर वाइज़र का तनख़्वाह देना मालिक का ही तो देना है, ह़क़ीक़तन तनख़्वाह देने वाला मालिक ही है, सुपर वाइज़र और नाज़िम तो उस के क़ाइम किये हुवे वसीले हैं । बिल्कुल इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और से मदद मांगना और उन नेक हस्तियों का अ़त़ाए इलाही से इमदाद करना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का इमदाद फ़रमाना है । क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ही अपनी अ़त़ा से उन्हें दाद रसी करने पर मुक़र्रर फ़रमाया है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और से मदद मांगने की तरग़ीब तो ख़ुद क़ुरआने पाक में भी मौजूद है । चुनान्चे पारह 1 सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 45 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِؕ (پارہ:۱، بقرہ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हुक्म फ़रमा रहा है कि सब्र और नमाज़ से मदद मांगो । अब अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा मदद मांगना नाजाइज़ होता तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ येह हुक्म क्यूं इरशाद फ़रमाता कि सब्र और नमाज़ से मदद चाहो ! क्यूंकि सब्र और नमाज़ ख़ुदा नहीं बल्कि ग़ैरे ख़ुदा हैं । इसी त़रह़ पारह 5 सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 64 में इरशाद फ़रमाया :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾ (پارہ:۵، النسآء:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस आयत के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : क्या **अल्लाह** तआ़ला (अपने मह़बूब की उम्मत के गुनाहों को) अपने आप नहीं बख़्श सकता था । फिर येह क्यूं फ़रमाया कि ऐ नबी ! तेरे पास ह़ाज़िर हों और तू **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से उन की बख़्शिश चाहे तो येह दौलत व ने'मत पाएंगे । (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का गुनाहगारों को दरे मुस्त़फ़ा पर ह़ाज़िरी का हुक्म देना और वहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना सिफ़ारिशी बनाना येही ग़ैरूल्लाह से मदद मांगना है और) येही हमारा मत़लब है । जो कुरआन की आयत साफ़ फ़रमा रही है । (फ़तावा रज़विय्या : 21/305)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे "मक्तबतुल मदीना" की मत़बूआ़ 274 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल**" के सफ़ह़ा नम्बर 92 पर है कि ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं रात को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में रहा करता था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुज़ू के लिये पानी लाया करता था और दीगर ख़िदमत भी बजा लाया करता था । एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : सल (या'नी मांगो, क्या मांगते हो !) मैं ने अ़र्ज़ की : اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِی الْجَنَّةِ मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बिहिश्त (या'नी जन्नत) में आप का साथ मांगता हूं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस के इ़लावा और कुछ ? ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की, कि मेरा मक़्सूद तो वोही है (या'नी जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त ही मुझे काफ़ी है) । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कस्रते सज्दा से मेरी मदद करो (या'नी ख़ुद भी उस मक़ामे बुलन्द की शान पैदा करो, मेरी अ़त़ा के नाज़ पर कस्रते इ़बादत से ग़ाफ़िल न हो जाओ) । (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل السجود، الحدیث ۴۸۹، ص ۲۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में मीठे मीठे आक़ा, सरवरे हर दो सरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते रबीआ़ से फ़रमाया : अइ़न्नी या'नी मेरी इआ़नत करो ! और इसी को इस्तिआ़नत व इस्तिमदाद या'नी मदद

www.dawateislami.net

मांगना कहते हैं । अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी से मदद मांगना नाजाइ़ज़ होता तो प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी भी येह इरशाद न फ़रमाते । मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा दूसरों से मदद मांगना, उन्हें अपना ह़ामी व मददगार मानना जाइ़ज़ है । ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये शेख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले **''करामाते शैरे ख़ुदा''** सफ़ह़ा 56 ता 95 का मुत़ालआ़ कर लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वस्वसे की काट हो जाएगी ।

ग़म हो गए बे शुमार आक़ा ! बन्दा तेरे निसार आक़ा !

बिगड़ा जाता है खेल मेरा, आक़ा आक़ा संवार आक़ा !

मजबूर हैं हम तो क्या फ़िक्र है, तुम को तो है इख़्तियार आक़ा !

मैं दूर हूं तुम तो हो मेरे पास, सुन लो मेरी पुकार आक़ा !

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 34)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने मदफ़ून की ख़बर दे दी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी अ़त़ा से अपने मह़बूब बन्दों को लोगों की इमदाद करने पर क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाता है, इसी त़रह़ वोही रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ उन नेक हस्तियों में से जिसे चाहता है इ़ल्मे ग़ैब भी अ़त़ा फ़रमाता है । मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के क़ब्रिस्तान ''जन्नतुल बक़ीअ़'' के उस ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए जो ''ह़श्शे कौकब'' (एक अन्सारी शख़्स के बाग़ वाली जगह) कहलाता था, आप ने वहां एक जगह पर खड़े हो कर फ़रमाया : अ़न क़रीब यहां एक मर्दे सालेह़ को दफ़्न किया जाएगा । ''चुनान्चे आप के इस फ़रमान के थोड़े ही अ़र्से बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हो गई और बाग़ियों ने जनाज़ए मुबारका के साथ इस क़दर उधम बाज़ी की, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को न तो रौज़ए मुनव्वरा के क़रीब दफ़्न किया जा सका और न ही जन्नतुल बक़ीअ़ के उस ह़िस्से में मदफ़ून किये जा सके जो अकाबिर या'नी बड़े बड़े सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

www.dawateislami.net

का क़ब्रिस्तान था, बल्कि सब से दूर अलग थलग उसी मक़ाम ''ह़श्शे कौकब'' में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन की गई जिस के बारे में कुछ अ़र्से पहले आप ने इरशाद फ़रमाया था, नीज़ येह वोह मक़ाम था जहां किसी की तदफ़ीन के मुतअ़ल्लिक़ कोई सोच भी नहीं सकता था, क्यूंकि उस वक़्त तक वहां कोई क़ब्र ही न थी।

(करामाते सहाबा, स. 96, ریاض النضرۃ، ج۳، ص۴۱ملخصاً، ازالۃ الخفاء، مقصد دوم، ج۴، ص۳۱۵،ملخصاً)

इ़ल्मे ग़ैब और औलियाउल्लाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया को उन बातों का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा देता है कि वोह कब और कहां वफ़ात पाएंगे और किस जगह उन की क़ब्र बनेगी ? और किसी काम के अन्जाम और मुस्तक़्बिल के ह़ालात को जान लेना इ़ल्मे ग़ैब कहलाता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसा इरशाद फ़रमाया वैसा ही हुवा। अब ज़रा सोचिये ! जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक सह़ाबी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें इरशाद फ़रमा रहे हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किस क़दर इ़ल्मे ग़ैब से नवाज़ा होगा ! चुनान्चे पारह 30 सुरतुत्तकवीर आयत नम्बर 24 में इरशाद बारी तआ़ला है :

﴿وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۝۲۴﴾ (پ:۳۰،التکویر:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं,

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को इ़ल्मे ग़ैब बताते हैं और ज़ाहिर है बताएगा वोही जो ख़ुद भी जानता हो। (ख़ौफ़नाक जादूगर, स.13)

ह़ज़रते इमाम अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद ख़त़ीब क़स्त़लानी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इ़ल्मे ग़ैब पर मुत्त़लअ़ (या'नी बा ख़बर) हैं, येह बात सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में बहुत मश्हूर और हर एक की ज़बान पर थी।

(المواہب اللدنیۃ بالمنح المحمدیۃ، المقصد الثامن فی طبہ...الخ، الفصل الثالث فی انبائہ بالانباء المغیبات، ج۳،ص۹۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुना,

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

- ❖ निहायत ही ह़लीम, सख़ी, नर्म दिल, नर्म गुफ़्तार, शराफ़त व आ़जिज़ी के पैकर, शर्मो ह़या के मज़हर होने के साथ साथ हर दिल अ़ज़ीज़ शख़्स थे ।
- ❖ सख़ावत के मज़हर थे, राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने के लिये अपने घर बार, जान और अवलाद की भी परवा नहीं करते थे, इसी लिये जब हिजरत का मौक़अ़ आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर वालों के साथ पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की और फिर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ भी हिजरत फ़रमाई ।
- ❖ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सुन्नते रसूल पर अ़मल करने का जज़्बा मरह़बा ! सद मरह़बा !
- ❖ आप को मुख़्तलिफ़ कई एक अल्क़ाबात से याद किया जाता है मसलन ''ज़ुन्नूरैन'', जामेउ़ल क़ुरआन, जैशुल उ़सरह या'नी तंगी वाले लश्कर की माली मुआ़वनत करने वाले, साह़िबुल हिजरतैन या'नी 2 हिजरतें करने वाले ।
- ❖ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मीठे पानी का चश्मा 35000 दीनार में ख़रीद कर मुसलमानों की सहूलत व आसानी के लिये राहे ख़ुदा में वक़्फ़ किया ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ह़िल्म के पैकर, सख़ावत के मज़हर, नर्मी और आ़जिज़ी के ख़ूगर बनें । इस से न सिर्फ़ हमारे अख़्लाक़ में बेहतरी आएगी बल्कि लोगों के दिलों में हमारी मह़ब्बत भी पैदा होगी और नेकी की दा'वत देना भी आसान होगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नक़्शे क़दम पर चलने और हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीना लाइब्रेरी का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कमो बेश 97 शो'बाजात में मदनी काम कर रही है। आसान अन्दाज़ से इ़ल्मे दीन की रोशनी फैलाने और लोगों को इस्लामी ता'लीमात से रू शनास करवाने के लिये इन शो'बों में एक शो'बा "अल मदीना लाइब्रेरी" भी क़ाइम किया गया है । जिस में मुत़ालए़ के लिये ख़ुशगवार माह़ोल, ऑडियो, वीडियो बयानात व मदनी मुज़ाकरे सुनने और मदनी चैनल देखने के लिये कम्प्यूटर वग़ैरा की तरकीब बनाई जाती है । अल मदीना लाइब्रेरी में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उ़लमाए अहले सुन्नत کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی और अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुबो रसाइल और CD's, VCD's वग़ैरा रखने की मजलिस की त़रफ़ से तै़ शुदा निज़ाम के मुत़ाबिक़ तरग़ीब दिलाई जाती है । हम भी इस सहूलत से फ़ाइदा उठाते हुवे इ़ल्मे दीन की बरकात से माला माल हो सकते हैं ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में हि़स्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की ख़िदमत के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हि़स्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम, हर माह 3 दिन के "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना" भी है । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं और मेरा एक अन्सारी पड़ोसी बनू उमय्या बिन ज़ैद (के मह़ल्ले) में रहते थे, जो मदीनए पाक की बुलन्दी पर था, हम बारी बारी सरकारे वाला तबार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते थे, एक दिन वोह मदीनए मुनव्वरा जाते और वापस आ

www.dawateislami.net

कर उस दिन की वह़ी का ह़ाल मुझ को बता देते और एक दिन मैं जाता और आ कर उस दिन की वह़ी की ख़बर का ह़ाल उन को बतलाता।

(صَحیح بُخاری ج ۱ ص ۵۰ حدیث ۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इ़ल्मे दीन सीखने का जज़्बा सद करोड़ मरह़बा ! हमें भी हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना चाहिये। इस से जहां हमें इ़ल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिलेगा, वहीं नेकी की दा'वत आ़म करने का सवाब भी हाथ आएगा। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बड़ी बरकतें हैं, आइये तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं।

जोड़ों की बीमारी भी गई और बे रोज़गारी भी गई

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरी एक त़रफ़ बे रोज़गारी थी तो दूसरी त़रफ़ जोड़ों के दर्द की पुरानी बीमारी थी, तंगदस्ती और शदीद दर्द के बाइ़स सख़्त बेज़ारी थी, बहुत इ़लाज करवाया मगर कुछ फ़ाइदा न हुवा। किसी इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए ज़ेह्न बना कर दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब बना दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़त भरी सोह़बत की बरकत से मेरी बरसों पुरानी जोड़ों की बीमारी बिल्कुल सह़ीह़ हो गई। मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर दूसरे ही दिन एक इस्लामी भाई आए और उन्हों ने मुझे काम पर लगा कर मेरे रोज़गार की तरकीब भी बना दी। येह बयान देते हुवे اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक साल से ज़ियादा अ़र्सा गुज़र चुका है, मेरा काम एक दिन भी बन्द नहीं हुवा और दर्द भी पलट कर नहीं आया।

जोड़ जोड़ आप के, हों अगर दुख रहे कर के हिम्मत चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, रिज़्क़ सुथरा मिले दर करम के खुलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुरमा लगाने के मदनी फूल

आइये ! मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ रिसाले "101 मदनी फूल" से सुरमा लगाने के मदनी फूल सुनते हैं :

"**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा '**इस्मिद**' (اِثْمِد) है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।"

﴿2﴾ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़सूद न हो तो कराहत नहीं। (فتاوٰی عالمگیری ج۵ ص۳۵۹)

﴿3﴾ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180)

﴿4﴾ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

(1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां

(2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो,

(3) तो कभी दोनों आंखों में दो-दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी-बारी दोनों आंखों में लगाइये।

(شُعَبُ الْاِیمان، ج۵ ص۲۱۸ ـ ۲۱۹)

www.dawateislami.net

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हि़स्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

🕮 बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात 🕮

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें

(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें

(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें

(4) बयान के ह़ुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें

(5) अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें

✍ राबित़ा ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۰)

﴾6﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ۱۰ ص ۲۵٤ حدیث ۱۷۳۰۵)

﴾2﴿ हर रात इ़बादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net